बजरंग बाण| **Bajrang Baan**

दोहा
निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करें सनमान ॥
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥
चौपाई
जय हनुमंत संत हितकारी
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ||1||
जन के काज विलम्ब न कीजै
आतुर दौरि महा सुख दीजै ||2||
जैसे कूदि सुन्धु वहि पारा
सुरसा बद पैठि विस्तारा ||3||
आगे जाई लंकिनी रोका
मारेहु लात गई सुर लोका ||4||
जाय विभीषण को सुख दीन्हा
सीता निरखि परम पद लीन्हा ||5||
बाग उजारी सिंधु महं बोरा
अति आतुर जमकातर तोरा ||6||
अक्षय कुमार मारि संहारा
लूम लपेट लंक को जारा ||7||
लाह समान लंक जरि गई
जय जय धुनि सुरपुर में भई ||8||
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी
कृपा करहु उन अन्तर्यामी ||9||
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता
आतुर होय दुख हरहु निपाता ||10||
जै गिरिधर जै जै सुखसागर
सुर समूह समरथ भटनागर ||11||
जय हनु हनु हनुमंत हठीले
बैरिहि मारु बज्र की कीले ||12||
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो
महाराज प्रभु दास उबारो ||13||
ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ||14||
ॐ ह्नीं ह्नीं ह्नीं हनुमंत कपीसा
ॐ हुं हुं हनु अरि उर शीशा ||15||
सत्य होहु हरि शपथ पाय के
रामदूत धरु मारु जाय के ||16||
जय जय जय हनुमंत अगाधा
दुःख पावत जन केहि अपराधा ||17||
पूजा जप तप नेम अचारा
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ||18||
वन उपवन, मग गिरि गृह माहीं
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ||19||

पांय परौं कर जोरि मनावौं
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ||20||
जय अंजनि कुमार बलवन्ता
शंकर सुवन वीर हनुमंता ||21||
बदन कराल काल कुल घालक
राम सहाय सदा प्रति पालक ||22||
भूत प्रेत पिशाच निशाचर
अग्नि बेताल काल मारी मर ||23||
इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की
राखु नाथ मरजाद नाम की ||24||
जनकसुता हरि दास कहावौ
ताकी शपथ विलम्ब न लावो ||25||
जय जय जय धुनि होत अकाशा
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ||26||
चरण शरण कर जोरि मनावौ
यहि अवसर अब केहि गौहरावौं ||27||
उठु उठु उठु चलु राम दुहाई
पांय परौं कर ज़ोरि मनाई ||28||
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ||29||
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ||30||
अपने जन को तुरत उबारो
सुमिरत होय आनन्द हमारो ||31||
यह बजरंग बाण जेहि मारै
ताहि कहो फिर कौन उबारै ||32||
पाठ करै बजरंग बाण की
हनुमत रक्षा करैं प्राण की ||33||
यह बजरंग बाण जो जापै
ताते भूत प्रेत सब कांपै ||34||
धूप देय अरु जपै हमेशा
ताके तन नहिं रहै कलेशा ||35||
दोहा
प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान ॥
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्घ करैं हनुमान ॥